हम किसी से कम नहीं

राजधानी के दस नंबर स्थित अमिताज दिल्ली दरबार की एम डी और सीईओ अमिता श्रीवास्तव उन महिलाओं में से एक हैं जिनके लिए परफेक्शन हर काम को करने की पहली शर्त है। उनके काम का यह तरीका होटल के इंटीरियर से लेकर खाने की गुणवत्ता में साफ नजर आता है...

रंग लाया बचपन का शौक

मुझे बचपन से खाना बनाने का शौक था। सब भाई-बहनों में बड़ी होने के कारण कम उम्र से घर के काम और खाना बनाने में मां की मदद करती। मैंने बीएससी ऑनर्स के साथ किया। जब मेरी शादी हुई तब मेरी उम्र 20 साल थी।

कविता व्यक्त करती है मन के भाव

मुझे पढ़ने-लिखने का शौक हमेशा रहा इसलिए मैंने नैचुरोपेथी में डिप्लोमा किया और साथ ही वक्त मिलने पर मैं कविताएं भी लिखने लगी। कविता लिखने के पीछे मेरा मकसद मन के भावों को कविताओं के माध्यम से व्यक्त करना है। ये वो विधा है जिसके लिए किसी जगह या समय की जरूरत नहीं, बल्कि कहीं भी और कभी भी आप अपने मन की बात को कविता के माध्यम से लिख सकते हैं।

काम में परफेक्शन बेहद जरूरी

मुझे हर काम को परफेक्शन के साथ करना पसंद है फिर चाहे वह मेरी होटल का इंटीरियर हो, खाना हो या घर की साफ सफाई। मुझे लगता है कि शादी के बाद अगर पति का साथ न हो तो पत्नी के लिए सफलता पाना मुश्किल होता है। मैं खुशनसीब हूं कि मेरे पति काबुल में रहते हुए भी मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

टीम वर्क के साथ करती हूं काम

ये होटल मेरे पति ने मुझे उपहार के तौर पर दी है जिसे जी जान से संवारने और आगे बढ़ाने की मेरी कोशिश जारी है। होटल की एमडी के तौर पर काम करते हुए मैं चाहती हूं कि टीम वर्क के साथ काम करूं। इस टीम के सदस्य अगर सही सलाह देते हैं तो उसे मानती हूं।

हर काम का रखती हूं ख्याल

मैं आज भी सौ लोगों का खाना बिना किसी की मदद के बना सकती हूं। मुझे मीठे का बहुत शौक है। हमेशा नई-नई तरह की डिशेज बनाना और लोगों को खिलाना मेरे स्वभाव में शामिल है। इसी दौरान साफ-सफाई का भी मैं ख्याल रखती हूं।

आजादी होना चाहिए

मुझे लगता है कि महिलाओं को अपना निर्णय स्वयं लेने की आजादी होना चाहिए। इस आजादी का परिणाम उनकी सफलता के रूप में एक दिन अवश्य सामने आता है। मेरे पति मेरे आदर्श भी हैं जिन्होंने मुझे इस बात का अहसास कराया कि डिग्रियां सिर्फ दीवारों पर टांग कर रखने के लिए नहीं होना चाहिए, बल्कि हमें इन डिग्रियों का इस्तेमाल करना आना चाहिए।

इस तरह सीखा मैंने

मेरे जीवन का टर्निंग प्वाइंट यही रहा कि 20 साल की उम्र में शादी होने के बाद मैंने पढ़ाई छोड़ने का नहीं, बल्कि नए सिरे से फिर से पढ़ने का मन बनाया। मैं आठ साल तक मुंबई में रही। वहां रहकर मैंने वहां की तेज रफ्तार जिंदगी के अनुरूप खुद को ढाला और उस माहौल से बहुत कुछ सीखा भी।

अमिता श्रीवास्तव
एम डी और सीईओ अमिताज दिल्ली दरबार

आत्मनिर्भरता आपकी जरूरत

महिलाओं के लिए इस जमाने में आत्मनिर्भर होना बहुत जरूरी है। इसमें कोई शक नहीं कि आपकी आत्मनिर्भरता आपमें आत्मविश्वास पैदा करती है। समाज में इज्जत बढ़ती है और घर में सभी को ये लगता है कि आप बाहर की दुनिया में भी पैर जमाने के लायक हैं।

कुछ समय हो अपने लिए

मुझे शिकायत है उन औरतों से जिन्होंने दोहरी जिम्मेदारियों को निभाने के नाम पर घर में पति को बेफिक्र कर दिया है। वे घर के, बाजार के और ऑफिस के सारे काम खुद निपटाती हैं और हर जगह शत प्रतिशत देने के चक्कर में खुद पर ध्यान नहीं दे पातीं।

क्यों रहें किसी से कम

जिस तरह से घर के बाहर काम के दौरान महिलाएं अपडेट रहती हैं उसी तरह उन्हें अपने सामान्य ज्ञान को भी हर दिन अपडेट करना चाहिए ताकि पति और बच्चों के बीच बैठकर वह भी हर मुद्दे पर अपनी राय देने में सक्षम हों। कई बार बच्चे माता-पिता को अपनी बात में इस वजह से शामिल नहीं करते क्योंकि उन्हें ये अहसास होता है कि जितनी जानकारी उन्हें है, उनके पेरेंट्स को नहीं।

स्वाद में झलकता है आपका मूड

मुझे मुंबई में एयर पोर्ट के पास बनी होटल सहारा का इंटीरियर बहुत पसंद है। मैं चाहती हूं कि अपनी होटल के माध्यम से लोगों को स्वादिष्ट व्यंजनों का मजा लेने का अवसर दूं। अच्छा खाने के लिए आपके मूड का अच्छा होना भी जरूरी है इसलिए तो कहा जाता है जैसा मन वैसा अन्न। जहां तक हो सके खुश रहने की कोशिश करें और खुश रहते हुए ही अपनों के लिए खाना बनाएं ताकि उसमें आपके प्यार का भी स्वाद झलके।

प्रस्तुति-शाहीन अंसारी